Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म की अवधारणा एक अनुशीलन

उषा खत्री
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
डॉ० जगदीश भारद्वाज
शोध निदेशक, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

सारांश
नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप एक महत्त्वपूर्ण विषय हैं। नाथ संप्रदाय में ब्रह्म को सर्वोच्च चेतना माना जाता है, जो सृष्टि के रचियता और संचालक हमने नाथ संप्रदाय में ब्रह्म के स्वरूप के विभिन्न पहलुओं को समझाया है, जैसे कि यौगिक स्वरूप याक्तिक स्वरूप और अद्भुत स्वरूप। इस संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप एक महत्त्वपूर्ण विषय है जो नाथ संप्रदाय के दर्शन और साधना को समझने में मदद करता है।
नाथ संप्रदाय के मुन्यों में ब्रह्म के दर्शन में अद्वैतवाद और तंत्रवाद के तत्त्व शामिल है। नाथ संप्रदाय के अनुयायी ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता मानते हैं और उसे अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं। नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप अद्वैतवधि और तंत्रवादी दोनों है। गोरखशतक और गोरखबोध, जैसे ग्रन्थों में ब्रहा के स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द : ब्रह्मा, चेतना, अद्वैतवाद, तन्त्र

प्रस्तावना
भारतीय ज्ञान परम्परा में नाथ संप्रदाय का विशेष स्थान है। यह संप्रदाय शैव, योग एवं तन्त्र की परम्पराओं से प्रभावित होकर विकसित हुआ। नाथ योगियों ने केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि साधना और व्यवहार में भी अद्वितीय योगदान दिया। इस संप्रदाय में ब्रह्म की अवधारणा मुख्य केन्द्रीय बिन्दु है, जिसे साधक आत्मज्ञान, साधना एवं गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से अनुभव करता है। नाथ संप्रदाय एक प्राचीन और महत्त्वपूर्णसंप्रदाय है, जो हिन्दू धर्म के तंत्र और भोग परंपराओं से जुड़ा हुआ है। इस संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप महत्त्वपूर्ण विषय है, जो नाथ संप्रदाय के दर्शन और साधना को समझने में मदद करता है।[1] नाथ संप्रदाय का इतिहास और दर्शन एक जटिल और विविध विषय है नाथ संप्रदाय के अनुयायी ब्रह्म को सर्वोच्य सत्ता मानते हैं और इसे अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।[2] नाथ संप्रदाय के दर्शन में अद्वैतवाद और तंत्रवाद के तत्त्व शामिल हैं।[3] नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप एक महत्त्वपूर्ण विषय हैं।

[1] डॉ० रामसिंह, नाथ संप्रदाय का इतिहास, पृ० 56
[2] डॉ० शिवप्रसाद, नाथ संप्रदाय के दर्शन, पृ० 24
[3] गुरु गोरखनाथ दर्शन 2015, पृ० 34

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नाथ संप्रदाय के अनुयायी ब्रह्म को शाश्वत सत्ता मानते हैं और उसे अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।[4]

ब्रह्म का स्वरूप नाथ संप्रदाय एक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण संप्रदाय है जो हिंदू धर्म के तंत्र और योग परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। इस संदल में ब्रह्म का स्वरूप एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जो नाथ संप्रदाय के दर्शन और साधना को समझने में सहायता करता है।[5] नाथ संप्रदाय के अनुयायी ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता मानते है और उसे अपने जीवन का लक्ष्य ज्ञानते हैं। नाथ संप्रदाय के दर्शन में, अद्वैतवाद और तंत्रवान के शामिल है। नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप अर्दूवादी और तंत्रवादी दोनों हैं।[6] अद्वैतवादी दृष्टिकोण से ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता माना जाता है जबकि तंत्रवादत दृष्टिकोण में ब्रह्म को शक्ति और ऊजी का स्त्रोत माना जाता है।[7] नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप अद्वैतवादी और तंत्रवादी दोनों है। अद्वैतवादी दृष्टिकोण में ब्रह्म को सर्वोच्च एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जो नाथ संप्रदाय के अनुयायी ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता मानते है। और अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।

ब्रह्म शब्द का अर्थ

नाथ संप्रदाय के अनुसार ब्रह्म शब्द का अर्थ सर्वोच्च सत्ता था परमात्मा है यह। शब्द नाथ संप्रदाय के दर्शन में विशेष रूप से महत्वपूर्व है, जिसमें ब्रह्म को एक मात्र सत्ता माना जाता है। नाथ संप्रदाय के अनुसार ब्रह्म शब्द के तीन अर्थ हैः ब्रह्म का अर्थ ''सर्वोच्च सत्ता'' या ''परमात्मा है 'यह शब्द नाथ संप्रदाय के दर्शन में विशेष रूप से महत्वपूर्व है, जिसमें ब्रह्म को एक मात्र सत्ता माना जाता है।[8] ब्रह्म का अर्थ ''आत्मा'' या ''स्व'' है यह शब्द नाथ और संप्रदाय के दर्शन में विशेष आत्म ज्ञान और आत्म साक्षात्कार के रूप में उपयोग किया जाता है।[9] ब्रहा का अर्थ ''विश्वथा ब्रहांड है– यही शब्द नाथ संप्रदाय के दर्शन में विश्व और ब्रहांड के सन्दर्भ में उपयोग किया जाता है।[10]

नाथ सम्प्रदाय का परिचय

ब्रह्म का निराकार स्वरूप

नाथ संप्रदाय के अनुसार ब्रह्म का वास्तविक स्वरूप निराकार एवं निरगुण है। यह किसी भी रूप, गुण या विशेषता से परे शुद्ध चेतना है। यही कारण है कि नाथ संप्रदाय ध्यान, समाधि

[4] डॉ० शिवप्रसाद, नाथ संप्रदाय के गोरखशतक, 2005, पृ० 12
[5] डॉ० रामसिंह, नाथ संप्रदाय का इतिहास 2010, पृ० 23
[6] डॉ० जोगिंदर कुमार, नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप, पृ० 231
[7] डॉ० जोगिन्दर कुमार, नाथ सम्प्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप, 2012, पृ० 74
[8] डॉ० रामसिंह, नाथ संप्रदाय का इतिहास, 2010, पृ० 23
[9] गोरखबोध, 2007, पृ० 34
[10] डॉ० शिव प्रसाद, नाथ सम्प्रदाय के दर्शन 2017, पृ० 74

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

और योग के माध्यम से साधकों को निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार कराने पर बल देता है। गोरखशतक और गोरखबोध में स्पष्ट कहा गया है कि ब्रह्म न तो किसी मूर्त रूप में सीमित है, न ही इन्द्रियगोचर है, अपितु वह आत्मानुभूति के स्तर पर अनुभवनीय है।

अद्वैतवादी दृष्टिकोण

नाथ संप्रदाय का दार्शनिक आधार अद्वैतवाद है। अद्वैत दृष्टि से ब्रहा ही एकमात्र सत्ता है 'अहं ब्रह्मास्मि'। आत्मा और ब्रह्म में कोई भिन्नता नहीं है। आत्मा का सच्चा स्वरूप पहचानना ही ब्रह्मज्ञान है। नाथ योगियों का मानना है कि जब साधक अपने भीतर छिपे हुए आत्मस्वरूप का बोध करता है, तभी वह ब्रह्म से एकाकार हो जाता है।

तान्त्रिक दृष्टिकोण

नाथ संप्रदाय तन्त्र दर्शन से भी गहराई से जुड़ा है। तान्त्रिक दृष्टि से ब्रह्म शक्ति और ऊर्जा का स्रोत है। वह सृष्टि के निर्माण, पालन और संहार का मूल कारण है। योगमार्ग और कुण्डलिनी जागरण की साधना इसी ब्रह्मशक्ति के अनुभव की ओर साधक को ले जाती है।

ब्रह्म और शिव का संबंध

नाथ परम्परा में शिव को शाश्वत ब्रह्म माना गया है। शिव ही निराकार ब्रह्म हैं, जो सृष्टि के रूप में प्रकट होते हैं। यहाँ ब्रह्म और शिव में कोई भेद नहीं है। ब्रह्म की सृष्टि–क्रिया शिव के माध्यम से होती है। इस प्रकार, ब्रह्म और शिव का संबंध अद्वैत एवं तात्त्विक एकता का है।

नाथ संप्रदाय का मुख्य उद्देश्य

आत्मा और ब्रहा के मिलन को प्राप्त करना है। यह संप्रदाय शैव और तंत्र विद्या पर आधारित है और इसके अनुयायी नाथ योगी के रूप में ध्यान के माध्यम से वे प्रसिद्ध है। योग, साधना और आत्मज्ञान की प्राप्ति करते हैं और ब्रह्म के साथ अपने रुकत्व को पहचानते हैं। नाथ संप्रदाय में गुरू–शिष्य परंपरा अत्यंत महत्त्वपूर्णमानी जाती है, और यह मान्यता है कि केवल गुरु के मार्ग दर्शन में ही आत्मतान प्राप्त किया जा सकता है। नाथ सम्प्रदाय के अनुसार, ब्रह्म का स्वरूप केवल एक साकार देवता के रूप में नहीं होता, बल्कि इसे निराकार ब्रह्म के रूप में पूजा जाता है। ब्रहा का निराकार रूप के लिए साक्षात्कार और ध्यान का विषय प्राय ब्रह्म के ही संप्रदाय के योगियों को निराकार स्वरूप समझने के लिए साधक को ध्यान और साधना में गहरे उत्तरने की आवश्यकता होती है।[11] ब्रह्म का निराकार स्वरूप नान्य संप्रदाय के दृष्टिकोण से ब्रहा का वास्तविक स्वरूप मिराकार व निरगुव ब्रहा है।, यह ब्रह्म न तो किसी रूप से बंधा हुआ है, और न ही ही इसमें कोई गुण है। यह एक अद्वितीय और शुद्ध

[11] डॉ० रामसिंह, भारतीय दर्शन का इतिहास नाथ संप्रदाय का इतिहास, पृ० 46

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चेतना का रूप है, जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है, लेकिन उसकी कोई निश्चित रूपरेखा नहीं है। यही कारण है कि नाथ संप्रदाय में ब्रह्मा का निराकार रूप ही सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया है। गीता में भगवान ब्रह्मास्मि मैं श्री कृष्ण ने भी यह बात कही है, ''अहं ब्रह्मास्मि, जो यह दर्शाता है कि ब्रह्म का स्वस्प मिराकार है नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का सबसे महत्त्वपूर्णमाना जाता अवधारणा ब्रह्म के बारे में के रचनाकार के रूप निराकार रूप ही एक हैं।[12] नाथ संप्रदाय में यही अपनाई जाती है। विद्या को सृष्टि में शुद्ध चेतना और ब्रह्म का साकार रूप माना जाता है।

ब्रह्म और शिव का सम्बध

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्थान शिव के साथ जुड़ा हुआ है। शिव को इस संप्रदाय में सर्वोच्च परमात्मा के रूप में पूजा जाता है, और ब्रह्म को सृष्टि के रचनाकार के रूप में पूजा जाता है।[13] हालांकि यह माना जाता हूँ कि ब्रह्म की सृष्टि क्रिया शिव के माध्यम से होती क्योंकि शिव ही शाश्वत ब्रह्म है।

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्थान

नाथ संप्रदाय में ब्रह्मा का स्थान अनूग और अद्वितीय है। यहाँ ब्रह्म को साकार स्वरूप में पूजा ही नहीं जाता, बल्कि उन्हें निराकार ब्रह्म के रूप में देखा जाता है। ब्रह्म की सृष्टि क्रिया को नाथ संप्रदायु में रूक तात्विक और यौगिक प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। नाथ संपद्राय के अनुसार ब्रह्म का कार्य सृष्टि के निर्माण का होता है लेकिन यह निमाण केवल एक भौतिक प्रक्रिया नहीं है। यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें आत्मा का जागरण और ब्रह्म के साथ मिलन का मार्ग प्रशस्त होता है। साधक जब ध्यान और साधना के माध्यम से गुण और आत्मिक दृष्टिकोण नाथ संप्रदाय में ब्रह्म के गुणों का विश्लेषण करता है तब वह ब्रह्म के गुण रचनात्मकता, ज्ञान और विवेक के प्रतीक है। इन गुणों का वास्तिक अनुभव तब होता है जब साधक ध्यान और साधना के माध्यम से अपने आत्मा को पहचानता है और उसे ब्रह्म से जोड़ता है। ब्रह्म के गुणों को नाथ संप्रदाय में साधना के रूप में देखा जाता है। जो साधक को आकज्ञान की प्राप्ति की दिशा में मार्ग दर्शन करता है।[14]

ब्रह्म के स्वरूप का रहस्य

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप एक रहस्यमय तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह स्वरूप साधक को आमा के भीतर छिपे हुए ब्रह्म के सत्य को पहचानने के लिए प्रेरित करता है। नाथ संप्रदाय का वास्तिवक रूप केवल बाहरी दृष्टि से के अनुसार, ब्रह्म देखा नहीं जाता

[12] भगवद्गीता वेद व्यास जी पृ० 12
[13] नाथ संप्रदाय का इतिहास, पृ० 123
[14] डॉ० राम सिंह, नाथ संप्रदाय का इतिहास, पृ० 214

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सकता बल्कि उसे आंतरिक ध्यान, साधना और तपस्या के द्वारा अनुभव किया है साधना और तपस्या कम गहरे उतरते तो उन्हें ब्रह्म के स्वरूप का अहसास होता है।[15] यह अहसास उन्हें ब्रह्म के अद्वितीय रूप में मिलन का मार्ग दिखाता है। नाथ संप्रदाय में यह अनुभव आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है।

ब्रह्म का रहस्य और साधना

नाथ योगियों ने ब्रह्म को रहस्यमय सत्ता माना है। यह रहस्य केवल बाहरी उपासना से नहीं, बल्कि गहन ध्यान, तपस्या और आत्मान्वेषण से ही उद्घाटित होता है। गुरु–शिष्य परम्परा इस अनुभूति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। गुरु के मार्गदर्शन के बिना ब्रह्म का बोध कठिन माना गया है।

संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप

आत्मब्रह्म का स्वरूप आठमान की प्रकृति और उसके साथ जुड़े हुरु विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है।[16]

परमात्मा की प्राप्ति

परमात्मा नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण है। ब्रहा का स्वरूप परमात्मा की प्रकृति और उसके साथ जुडे हुए पहलुओं को समझने मदद करता है।[17]

आध्यात्मिक विकास

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप आध्यात्मिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। ब्रह्म का स्वरूप आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक ज्ञान और समझ प्रदान करता है। जीवन का उद्देश्य नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप जीवन का उद्देश्य समझने में मदद करता है।[18] ब्रह्म का स्वरूप जीतन के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करता करता है।

वर्तमान समय में उपयोगिता

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म के स्वरूप की वर्तमान समय में बहुत उपयोगिता है। जिसका वर्बन इस प्रकार है– (1) आत्मज्ञान और आत्मसाक्षात्कार : वर्तमान समय में आत्मज्ञान और आत्म साक्षात्कार की आवश्यकता बहुत अधिक है। नाथ संप्रदाय में साक्षात्कार मैं ब्रह्म का स्वरूप आत्म ज्ञान और आत्म के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह हमें मूड़े हुए विभिन्न और उसके साना जुड़े हुए मदद करता है।[19] वर्तमान में नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए

[15] गोरखशतक, 2005, पृ० 12
[16] डॉ० रामसिंह, नाथ संप्रदाय का इतिहास, 2010, पृ० 23
[17] गोरक्षशतकम् 2005, पृ० 12
[18] गुरु गोरखनाथ, पृ० 22
[19] गोरक्षशतकम्, 2005, पृ० 25

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

महत्त्वपूर्ण है। यह हमें परमात्मा की प्रकृति और उसके साथ जुड़े कुछ विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है।

आध्यात्मिक विकास

वर्तमान समय में आध्यात्मिक विकास और गुरु की आवश्यकता बहुत अधिक है। नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप आध्यात्मिक विकास के सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है। यहाँ हमें आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक ज्ञान और समझ प्रदान करता है।[20]

जीवन का उद्देश्य

वर्तमान समय में जीवन का उद्देश्य को जानने के लिए नाथ साहित्य में निहित ज्ञान को जानना अत्यन्त आवश्यकता एवं महत्त्वपूर्ण है। नाथ संप्रदाय में ब्रह्म का स्वरूप जीवन का उद्देश्य समझने में सहायक करता है। जो हमें जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे प्राप्त करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

नाथ संप्रदाय में ब्रह्म की अवधारणा अद्वितीय एवं बहुआयामी है। यहाँ ब्रह्म को केवल सृष्टिकर्ता या साकार देवता न मानकर, निराकार शुद्ध चेतना के रूप में स्वीकार किया गया है। अद्वैतवाद और तन्त्रवाद का समन्वय इसकी विशेषता है। नाथ योगियों का उद्देश्य योग और साधना के माध्यम से साधक को आत्मबोध कराकर ब्रह्म के साथ एकात्म करना है। वर्तमान समय में भी यह अवधारणा आत्मज्ञान, आध्यात्मिक विकास और जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

[20] डॉ० शिवप्रसाद, नाथ संप्रदाय के दर्शन, पृ० 56